सच्ची क़ुरबानगाह

sachchī qurbāngāh

The True Altar

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 20]

(Urdu—Hindi script)

© 2023 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is a collage of
R. Gunther
https://freebibleimages.org/illustrations/ls-cain-abel/; geralt
https://pixabay.com/cs/illustrations/abstraktn%C3%AD-barvit-akvarel-1076264/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

मेरी नजात क़बूल करो	2
मेरी हिफ़ाज़त क़बूल करो	3
ख़ुदा बाप की गारंटी क़बूल करो	5
अल्लाह के फ़रज़ंद को क़बूल करो	7
सच्ची क़ुरबानगाह क़बूल करो	9
क्या आपको यह नजात मिली है?	10
इंजील, यूहन्ना 10:22-42	12

सर्दियों का मौसम था। मख़सूसियत की ईद के बाइस बैतुल-मुक़द्दस और लोगों के घर बेशुमार चराग़ों से चमक-दमक रहे थे।

► **यह किस क़िस्म की ईद थी?**

तक़रीबन दो सौ साल पहले एक परदेसी बादशाह ने बैतुल-मुक़द्दस की क़ुरबानगाह पर बुत लगाकर उसकी बेहुरमती की थी। यह देखकर यहूदियों ने उस पर फ़तह पाकर क़ुरबानगाह को नए सिरे से मख़सूस किया था। यह ईद इसी मख़सूसियत की ख़ुशी में मनाई जाती थी। हम देखेंगे कि इस ईद का ईसा मसीह से गहरा ताल्लुक़ है।

ईद के दौरान ईसा मसीह बैतुल-मुक़द्दस में आया। जब वह वहाँ के एक बरामदे में टहल रहा था तो लोग उसे घेरकर कहने लगे, “आप हमें कब तक उलझन में रखेंगे? अगर आप मसीह हैं तो हमें साफ़ साफ़ बता दें।” ईसा मसीह ने जवाब में क्या कहा? पहली बात,

मेरी नजात क़बूल करो

► **क्या ईसा मसीह ने अपने काम और कलाम से साबित नहीं किया था कि वह अल-मसीह है?**

ज़रूर।

► **तो यह लोग क्यों चाहते थे कि वह साफ़ साफ़ बता दे कि मैं मसीह हूँ?**

जो कुछ ईसा मसीह ने किया था वह उनके नज़दीक नाकाफ़ी था। उनके ख़याल में अल-मसीह रोमी दुश्मन का जुआ तोड़कर यहूदी क़ौम को आज़ाद करेगा। वह एक दुनियावी हाकिम चाहते थे, इस-लिए उनकी आँखें ईसा मसीह के असली किरदार के लिए बंद रहीं। वह मानते तो थे कि आनेवाला मसीह शफ़ा देगा और दूसरे मोजिज़े करेगा। लेकिन वह इस बात के लिए अंधे थे कि ईसा मसीह के आने का अव्वल मक़सद क्या था।

► **अव्वल मक़सद क्या था?**

अव्वल मक़सद यह था कि इनसान को नजात दे—गुनाहों से नजात।

► **यह क्यों उसके आने का अव्वल मक़सद था?**

अपने गुनाहों की वजह से हम पाक ख़ुदा के हुज़ूर मंज़ूर नहीं हो सकते। इसलिए ज़रूरी है कि हम गुनाहों से आज़ाद हो जाएँ। आज भी अकसर लोग ईसा मसीह के मोजिज़े पसंद करते हैं। लेकिन कम ही उसका अव्वल मक़सद क़बूल करते हैं। कम ही अपने गुनाहों से

आज़ाद होकर ख़ुदा के हुज़ूर मंज़ूर हो जाते हैं। इसी लिए ईसा मसीह ने जवाब दिया,

> मैं तुमको बता चुका हूँ, लेकिन तुमको यक़ीन नहीं आया। जो काम मैं अपने बाप के नाम से करता हूँ वह मेरे गवाह हैं। लेकिन तुम ईमान नहीं रखते क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो। (यूहन्ना 10:25-27)

► **जो ईमान न लाए क्या वह ईसा मसीह की भेड़ें थे?**
नहीं।

► **इससे हम ईमान के बारे में क्या सीखते हैं?**
ईमान अच्छे चरवाहे के साथ रिश्ता है—भेड़ का रिश्ता जिसकी आँखें हमेशा अपने आक़ा की तरफ़ लगी हुई हैं। शागिर्द वह है जो उसकी आवाज़ सुनकर उसके पीछे चलता है। सबने उसका कलाम और उसके काम देख लिया था। लेकिन सब ईमान न लाए। जो ईमान न लाए उनका अच्छे चरवाहे से रिश्ता पैदा न हुआ। उन्हीं को ईसा मसीह ने कहा कि मेरी नजात क़बूल करो। लेकिन उन्होंने इनकार किया। दूसरी बात,

मेरी हिफ़ाज़त क़बूल करो

उसने फ़रमाया,

> मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ और वह मेरे पीछे चलती हैं। मैं उन्हें अबदी ज़िंदगी देता हूँ, इसलिए वह कभी हलाक नहीं होंगी। कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा। (यूहन्ना 10:27-28)

► **यहाँ ईसा मसीह कौन-सी तस्वीर इस्तेमाल करता है?**
चरवाहे और भेड़ों की तस्वीर। वह अच्छा चरवाहा है।

► **उसकी भेड़ें कौन हैं?**
उस पर ईमान लानेवाले।

► **यह भेड़ें क्या करती हैं?**
- वह उसकी आवाज़ सुनती हैं।
- वह उसके पीछे चलती हैं।

► **चरवाहा क्या करता है?**
- वह उन्हें जानता है।
- वह उन्हें अबदी ज़िंदगी देता है।

► **अबदी ज़िंदगी का क्या नतीजा निकलता है?**
- उसकी भेड़ें कभी हलाक नहीं होंगी।
- कोई उन्हें उसके हाथ से छीन न लेगा। उसकी भेड़ें उसके हाथ में हैं। इसलिए वह महफ़ूज़ हैं।

ईसा मसीह की नजात पाने से हमें अबदी हिफ़ाज़त मिलती है। तीसरी बात,

ख़ुदा बाप की गारंटी क़बूल करो

जब ईसा मसीह हमारा चरवाहा है तो हमें नजात और हिफ़ाज़त मिलती है। लेकिन हम किस तरह यक़ीन रख सकते हैं कि यह हिफ़ाज़त पक्की है? अब ईसा मसीह इस सवाल का जवाब देता है,

> क्योंकि मेरे बाप ने उन्हें मेरे सुपुर्द किया है और वही सबसे बड़ा है। कोई उन्हें बाप के हाथ से छीन नहीं सकता। मैं और बाप एक हैं। (यूहन्ना 10:29-30)

► **कौन हमारी हिफ़ाज़त की गारंटी देता है?**
ख़ुदा बाप। उसी ने भेड़ें अपने फ़रज़ंद के सुपुर्द की हैं।

► **उसकी गारंटी क्यों ठोस है?**
इसलिए कि वह सबसे बड़ा है।

► **लेकिन ख़ुदा बाप क्यों भेड़ों की गारंटी देता है?**
इसलिए कि ईसा मसीह और बाप एक हैं। यों उनका एक ही इरादा और एक ही काम है। यह सुनकर लोग पत्थर उठाने लगे ताकि उसे संगसार करें।

► **वह ईसा मसीह को क्यों क़त्ल करना चाहते थे?**
ईसा मसीह ने भी यही सवाल पूछा,

> मैंने तुम्हें बाप की तरफ़ से कई इलाही निशान दिखाए हैं। तुम मुझे इनमें से किस निशान की वजह से संगसार कर रहे हो? (यूहन्ना 10:30)

► **इलाही निशान से क्या मुराद है?**

ईसा मसीह के मोजिज़े इलाही निशान थे, क्योंकि यह ज़ाहिर करते थे कि ईसा मसीह को ख़ुदा बाप से भेजा गया है। अनगिनत मोजिज़े हुए थे जो सिर्फ़ ख़ुदा की तरफ़ से हो सकते थे। यही ज़ाहिर करते थे कि वह और बाप एक हैं। कि जो भी वह कर रहा है वह ख़ुदा बाप की तरफ़ से है।

► **उसके मुख़ालिफ़ों ने क्या जवाब दिया?**

उन्होंने जवाब दिया कि तुमने कुफ़र बका है। तुम जो सिर्फ़ इनसान हो अल्लाह होने का दावा करते हो। यह एक संजीदा इलज़ाम था इसलिए लाज़िम है कि हम उस पर ग़ौर करें जो ईसा मसीह कहना चाहता था।

► **ख़ुदा बाप और ईसा मसीह किस तरह एक हैं?**

- ईसा मसीह कहना चाहता है कि इरादे और काम में हम एक हैं। मैं ख़ुदा बाप की मरज़ी के अलावा और कुछ नहीं करता। इसका मतलब यह नहीं है कि मैं ख़ुदा बाप हूँ। हम फ़रक़ हैं और एक भी हैं। वह ख़ुदा बाप है और मैं फ़रज़ंद हूँ। उसी ने मुझे दुनिया में भेजा ताकि इनसान को नजात दूँ।

- ईसा मसीह न सिर्फ़ इनसान है। वह ख़ुदा का फ़रज़ंद है जिसने इनसान बनने का रास्ता इख़्तियार किया ताकि हमें नजात दे। यों वह ख़ुदा का फ़रज़ंद भी है और इनसान भी। इनसान की हैसियत से उसने हमारी सज़ा बरदाश्त की ताकि हमारे गुनाह मिट जाएँ। फ़रज़ंद की हैसियत से वह जी उठा और आसमान पर उठा लिया गया। यों जो भी उसकी आवाज़ सुने वह उसके पीछे चलकर एक दिन जी उठेगा।

यही बात हमें नजात की तसल्ली देती है। हमारे नेक काम हमें यह तसल्ली नहीं दिला सकते कि हम जन्नत में दाख़िल हो जाएँगे। ख़ुदा बाप ही इसकी गारंटी है। वह फ़रमाता है कि नजात का जो काम मैंने अपने फ़रज़ंद के वसीले से किया वह पक्का है। मैं ही उसकी गारंटी देता हूँ।

ईसा मसीह के मुख़ालिफ़ उसके मोजिज़े क़बूल कर सकते थे। लेकिन वह यह क़बूल नहीं कर सकते थे कि ऐसे मोजिज़े सिर्फ़ ख़ुदा का फ़रज़ंद कर सकता है। आज तक बहुत-से लोग यह बात क़बूल नहीं कर सकते।

► **क्या आप यह क़बूल कर सकते हैं?**

उसकी आवाज़ सुनो। ख़ुदा बाप की गारंटी क़बूल करो। चौथी बात,

अल्लाह के फ़रज़ंद को क़बूल करो

फिर भी ईसा मसीह ने मुख़ालिफ़ों के ज़हनों को खोलने की कोशिश की। उसने फ़रमाया,

> क्या यह तुम्हारी शरीअत में नहीं लिखा है कि अल्लाह ने फ़रमाया, 'तुम ख़ुदा हो'? उन्हें 'ख़ुदा' कहा गया जिन तक अल्लाह का यह पैग़ाम पहुँचाया गया। और हम जानते हैं कि कलामे-मुक़द्दस को मनसूख़ नहीं किया जा सकता। तो फिर तुम कुफ़र बकने की बात क्यों करते हो जब मैं कहता हूँ कि मैं अल्लाह का फ़रज़ंद हूँ? (यूहन्ना 10:34-36)

► **यह कौन-सा हवाला है जिसका ज़िक्र ईसा मसीह ने किया?**
यहाँ उसने एक ज़बूर का ज़िक्र किया। वहाँ लिखा है,

> बेशक मैंने कहा, "तुम ख़ुदा हो, सब अल्लाह तआला के फ़रज़ंद हो। लेकिन तुम फ़ानी इनसान की तरह मर जाओगे, तुम दीगर हुक्मरानों की तरह गिर जाओगे।" (ज़बूर 82:6)

► **इस ज़बूर का क्या मतलब है?**
शरीअत के यहूदी उस्ताद मुत्तफ़िक़ थे कि ख़ुदा ने यह बात इसराईली जमात से फ़रमाई थी।

► **इसराईलियों को किस तरह कहा जा सकता था कि तुम अल्लाह के फ़रज़ंद हो?**
उन पर शरीअत नाज़िल हुई थी इसी लिए वह ख़ुदा जैसे यानी उसके फ़रज़ंद थे। शरीअत ने उन्हें यह रोब और वक़ार दिला दिया

था। लेकिन अपनी ना-फ़रमानी की वजह से यहूदी यह रोब और वक़ार खो बैठे थे। इसलिए ज़बूर कहता है कि तुम फ़ानी इनसान की तरह मर जाओगे।

► **ईसा मसीह यहाँ क्या कहना चाहता है?**

जब शरीअत नाज़िल हुई तो तुम्हें इतना रोब मिला कि अल्लाह तआला के फ़रज़ंद कहा गया। लेकिन तुम इस लायक़ न रहे। इसी लिए मैं दुनिया में आया। ज़रूरी था कि ख़ुदा का फ़रज़ंद नाज़िल हो जाए ताकि तुम अच्छे चरवाहे की भेड़ें बन जाओ। लाज़िम था कि ख़ुदा का फ़रज़ंद नाज़िल हो जाए ताकि तुम ख़ुदा के ख़ानदान में शामिल हो जाओ। पाँचवीं बात,

सच्ची क़ुरबानगाह क़बूल करो

ईसा मसीह की बातें हमेशा बड़ी गहराइयों में ले जाती हैं। अब उसने फ़रमाया,

> आख़िर बाप ने ख़ुद मुझे मख़सूस करके दुनिया में भेजा है। (यूहन्ना 10:36)

► **इसके पीछे क्या ख़याल है?**

मख़सूसियत की ईद थी। उस पर यह याद किया जाता था कि बेहुरमती के बाद क़ुरबानगाह को नए सिरे से मख़सूस किया गया था। अब ईसा मसीह ने फ़रमाया कि मुझे ही मख़सूस किया गया है।

जिस क़ुरबानगाह की मख़सूसियत तुम मना रहे हो वह अब बेमानी है।

► **क्यों?**

क़ुरबानगाह वह इंतज़ाम था जिससे इनसान का ख़ुदा से मेल-मिलाप हो जाता था। उसी पर लोग अपनी क़ुरबानियाँ पेश करते थे ताकि अल्लाह तआला उनके गुनाह माफ़ करे। लेकिन बैतुल-मुक़द्दस की क़ुरबानगाह हक़ीक़त का बस साया था। साया असल काम नहीं कर सकता। वह सिर्फ़ असल की तरफ़ इशारा करता है। किसी आदमी का साया उस आदमी का काम नहीं कर सकता। साये को देखकर शायद ही हम आदमी की शक्ल का अंदाज़ा लगा सकें। न यह साया साँस ले सकता है न हाथ-पाँव हिला सकता है। अब ईसा मसीह में साये का असल आ गया था। वह सच्ची क़ुरबानगाह है। उसे मख़सूस करके दुनिया में भेज दिया गया था ताकि उसकी क़ुरबानी ख़ुदा से हक़ीक़ी मेल-मिलाप पैदा करे।

► **क्या लोग यह सुनकर ख़ुश हुए?**

नहीं। यह सुनकर उन्होंने उसे पकड़ने की कोशिश की। लेकिन वह उनके हाथ से निकल गया। एक आख़िरी बात,

क्या आपको यह नजात मिली है?

यरूशलम में रहना मुश्किल हो गया था इसलिए ईसा मसीह अपने शागिर्दों के साथ दरियाए-यरदन के पार उस जगह चला गया जहाँ यहया

नबी शुरू में बपतिस्मा दिया करता था। वहाँ बहुत-से लोग उस पर ईमान लाए।

► **लोग क्यों उस पर ईमान लाए?**

उन्होंने कहा,

> यहया ने कभी कोई इलाही निशान न दिखाया, लेकिन जो कुछ उसने इसके बारे में बयान किया, वह बिलकुल सही निकला। (यूहन्ना 10:41)

यह लोग पहले अल्लाह के पैग़ंबर यहया पर ईमान लाए थे, और अब उन्होंने देखा कि हर एक बात जो यहया ने ईसा मसीह के बारे में फ़रमाई थी सही निकली है।

► **इनमें और ईसा मसीह के मुख़ालिफ़ों में क्या फ़रक़ था?**

काफ़ी देर से यह लोग पहचान चुके थे कि अल्लाह, यहया नबी के वसीले से बात कर रहा है। अब उन्होंने यही बात ईसा मसीह में पाई। उन्होंने उसकी नजात और हिफ़ाज़त क़बूल की। वह जानते थे कि यह नजात पक्की है क्योंकि ख़ुदा बाप इसकी गारंटी देता है।

दूसरों ने ईसा मसीह की नजात क़बूल न की। वह उसकी आवाज़ नहीं सुन सकते थे, और उसकी भेड़ें न बने। न सिर्फ़ यह बल्कि वह उसके सख़्त मुख़ालिफ़ बन गए।

अब सवाल यह है : क्या आपने नजात पाई है? क्या आप अच्छे चरवाहे के पीछे चलकर अपने आपको महफ़ूज़ समझते हैं? क्या आपको पूरा

यक़ीन है कि ख़ुदा बाप इस नजात की गारंटी देता है? क्या आपने उसके फ़रज़ंद की क़ुरबानी क़बूल की है?

इंजील, यूहन्ना 10:22-42

सर्दियों का मौसम था और ईसा बैतुल-मुक़द्दस की मख़सूसियत की ईद बनाम हनूका के दौरान यरूशलम में था। वह बैतुल-मुक़द्दस के उस बरामदे में फिर रहा था जिसका नाम सुलेमान का बरामदा था। यहूदी उसे घेरकर कहने लगे, “आप हमें कब तक उलझन में रखेंगे? अगर आप मसीह हैं तो हमें साफ़ साफ़ बता दें।”

ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको बता चुका हूँ, लेकिन तुमको यक़ीन नहीं आया। जो काम मैं अपने बाप के नाम से करता हूँ वह मेरे गवाह हैं। लेकिन तुम ईमान नहीं रखते क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो। मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ और वह मेरे पीछे चलती हैं। मैं उन्हें अबदी ज़िंदगी देता हूँ, इसलिए वह कभी हलाक नहीं होंगी। कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा, क्योंकि मेरे बाप ने उन्हें मेरे सुपुर्द किया है और वही सबसे बड़ा है। कोई उन्हें बाप के हाथ से छीन नहीं सकता। मैं और बाप एक हैं।”

यह सुनकर यहूदी दुबारा पत्थर उठाने लगे ताकि ईसा को संगसार करें। उसने उनसे कहा, “मैंने तुम्हें बाप की तरफ़ से कई इलाही निशान दिखाए हैं। तुम मुझे इनमें से किस निशान की वजह से संगसार कर रहे हो?”

यहूदियों ने जवाब दिया, “हम तुमको किसी अच्छे काम की वजह से संगसार नहीं कर रहे बल्कि कुफ़र बकने की वजह से। तुम जो सिर्फ़ इनसान हो अल्लाह होने का दावा करते हो।”

ईसा ने कहा, “क्या यह तुम्हारी शरीअत में नहीं लिखा है कि अल्लाह ने फ़रमाया, ‘तुम ख़ुदा हो’? उन्हें ‘ख़ुदा’ कहा गया जिन तक अल्लाह का यह पैग़ाम पहुँचाया गया। और हम जानते हैं कि कलामे-मुक़द्दस को मनसूख़ नहीं किया जा सकता। तो फिर तुम कुफ़र बकने की बात क्यों करते हो जब मैं कहता हूँ कि मैं अल्लाह का फ़रज़ंद हूँ? आख़िर बाप ने ख़ुद मुझे मख़सूस करके दुनिया में भेजा है। अगर मैं अपने बाप के काम न करूँ तो मेरी बात न मानो। लेकिन अगर उसके काम करूँ तो बेशक मेरी बात न मानो, लेकिन कम-अज़-कम उन कामों की गवाही तो मानो। फिर तुम जान लोगे और समझ जाओगे कि बाप मुझमें है और मैं बाप में हूँ।”

एक बार फिर उन्होंने उसे गिरिफ़्तार करने की कोशिश की, लेकिन वह उनके हाथ से निकल गया।

फिर ईसा दुबारा दरियाए-यरदन के पार उस जगह चला गया जहाँ यहया शुरू में बपतिस्मा दिया करता था। वहाँ वह कुछ देर ठहरा। बहुत-से लोग उसके पास आते रहे। उन्होंने कहा, “यहया ने कभी कोई इलाही निशान न दिखाया, लेकिन जो कुछ उसने इसके बारे में बयान किया, वह बिलकुल सही निकला।” और वहाँ बहुत-से लोग ईसा पर ईमान लाए।